64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിരുത്തി... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 948 Participant Code: 030

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय

भारत के कई स्थानों में विभिन्न तरह के विदेशी विश्वविद्यालय स्थित हैं। भारत से ही नहीं बल्कि विभिन्न राज्यों से बच्चे उन विद्यालयों में जाते हैं। वहाँ किसी तरह के भेद-भाव नहीं होता है। सब लोग एकता से और प्यार से वहाँ मिलकर पढ़ता है। विदेशी विद्यालयों भारत में मौजूद होने से अलग तरह के कपड़े, खाने, भाषा, संस्कृति, जाति, विश्वास, लोगों आदि से हमारे पहचान बढ़ जाते हैं। अंग्रेजी, फेंच, जैसे विदेशी भाषाओं को जानने में विदेशी विद्यालय हमारी मदद करेंगी। विदेशी विद्यालयों से बच्चे अपने मनपसंद विषय भी पढ़ेंगे और दुनिया के कई चीजों के ज्ञान भी प्राप्त करेंगे।

भारत में कई जगहों में विदेशी विद्यालयों के जैसे विश्वविद्यालयों बनाया है। केरला के तिरुवनंतापुरम में स्थित यूणिवेरसिटी कॉलेज

ब्रिटेन के विद्यालयों को निर्माण तरीके में ही बनायागया है। उस कॉलेज में ब्रिटेन विद्यालयों के निर्माण स्टाइल हम देख सकते हैं। भारत के विद्यालयों से विभिन्न तरह में विदेशी विद्यालयों निर्माण किया है। लेकिन उससे मनुष्य बदलता नहीं। सब विद्यालयों में भी मनुष्य ही पढ़ते हैं। बदलाव सिर्फ शिक्षा देने के तरीके में है। वास्तव में भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों बहुत कम है। उनको संख्या बढाने से आनेवाले पीढी के नागरिकों को ज्ञान भी तेज और सशक्त बनेंगे। विदेशी रीतियों और भाषा से लोग वंचित नहीं होते। हमारे बच्चों को और हम्हें अगर दो, तीन या ज्यादा विदेशी भाषाओं जानते हैं तो हम अगर किसी विदेशी बात करने पड़े तो हम हमारे ज्ञान का प्रयोग कर सकते हैं। इसलिए विदेशी विद्यालयों में पढ़ने से ज्ञान, बुद्धि दृष्टिकोण, व्यक्तिगत विकास आदि में बढ़ाव आएँगे। एक हिंदी मशहूर यूट्यूबर ने चैना देश में गया था। वहाँ उसके साथ दोस्तों भी थे।

लेकिन एक मोड़ पर जब वे एक कपड़े खरीदने केलिए जाकर वापस आया तो वह रास्ता भूल गया। दोस्तों को कई भी दिखा नहीं दे रहे थे। उसके पास ना फोण था ना अधिक पैसा। वे बहुत घबराया और बुरी तरह फँस चुका था। इसलिए कुछ अन्य देश में जाने से पहले वहाँ के बारे में कुछ जानकारियाँ लेकर जाना है। अगर उसको वहाँ के भाषा जानते तो वह किसी और से मदद ले सकती थी।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय अच्छा है। लेकिन विदेशी विद्यालयों में विभिन्न तरह के लोगों के साथ पढ़कर भारतीय महत्व छोड़ना नहीं चाहिए। भारतीय लोगों को हम भूलना नहीं चाहिए। भारतीय संस्कृति, भाषा, लोग, स्थान, खाना, आदि के महत्व हमेशा हमारे मन में होना चाहिए। हम संपन्न, अमीर, गरीब या कोई भी हो लेकिन हमारे मानवीय मूल्यों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। गाँवों के कई लड़के-लड़कियाँ विदेशी लोगों से मिलकर पार्टी, क्लब, शराब, बीयर आदि

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 64-ാമത് പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

बुरे आदतों जीवन में लाकर खुद को नाश करता है। सिर्फ विदेशी ही नहीं बल्कि भारतीय भी ऐसे बुरे कलाकार्यक्रम में शामिल होता है। इसलिए अपने जान को नुकसान पहुँचाकर कोई बुरा काम नहीं करना। विदेशी संस्कृति बढ़ जाने से भारत के महत्व खोना नहीं। सभी विद्यालयों को अपने-अपने गुण और दोश हैं। विदेशी विद्यालयों में पढ़ने से दुनिया के बारे में कई और जानकारियाँ भी मिलेंगे। भारतीय विद्यालयों हम हमारे देश के लोगों से मिलकर हमारी भाषा में बातचीत करके पढाई कर सकते हैं।

नीट, कीम, सी.यु.इ.टी, जे.ई.ई आदि एन्टेन्स परीक्षाओं लिखने केलिए भारत के अंदर ही क्षेत्रों होते तो भारतीय को उतना ही सरल होना है। उन परीक्षाओं लिखने केलिए उससे संबंधित शिक्षा पाने केलिए विदेशी विद्यालय जाना और वहाँ पढ़ना किसी भी भारतीय को मुश्किल ही होगा।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

वहाँ के भाषा, खर्चा, खाना आदि से हम जल्दी पहचान नहीं लेंगे। लेकिन वहाँ पढ़ने से हमारी मौकाएँ बढ़ाता है। सरकार के भारतीय विद्यालयों में पढ़ने से हमारा खर्चा कम होगा। कम पैसे देकर हम बड़े काम कर पाएँगे। विदेशी विद्यालयों में भारतीय विद्यालयों से भी ज़्यादा पैसा परीक्षा, क्लास, गाड़ी, हास्टल, पुस्तक आदि केलिए देना पड़ेगा। आधुनिक समाज में पैसे की मूल्य बढ़ रहे हैं। इसलिए हम खर्चा कम करके जीना ही चाहेंगे। किस विद्यालय में क्या पढ़ना है, सब हमारे फैसला है।

कई विदेशी विद्यालय में लेपटॉप, फॉण, आदि तकनीकियाँ क्लास में बच्चे ला सकते हैं। उसके सहायता से अध्यापक देने वाले कामों को बहुत जल्दी से कर सकते हैं। कोई असाईन्मन्ट्स या वर्कशीट है तो लेप में करके अध्यापक को बेच सकते हैं। विद्यालयों में तकनीकी आने से बच्चे

प्रौद्योगिकी को इस्तमाल करने में ज्यादा काबिल हो जाएँगे। आनेवाले पीढ़ी में आर्थिक विकास बढ़ने केलिए यह काय बच्चों को सहायता करेंगे। ज्ञानपूर्ण नागरिकों हमारे देश केलिए उत्तम होगा। भारतीय विद्यालयों में भी प्रौद्योगिकी का उपयोग और ज्ञान बच्चों को सिखाना चाहिए। विदेशी लोगों के जैसे हमारे बच्चों भी तकनीकी चीज़ों में अच्छा होना चाहिए। लेकिन ज्यादा हम कुछ भी तकनीकी इस्तमाल नहीं करना। हमारे आँखों केलिए बुरा हो सकता है। लिखना भी बंद मत करना। सबकुछ हमारे साथ होना चाहिए, ज्ञान और मूल्य। 'विदेशी या भारतीय, हमारी व्यक्तित्व भूलना नहीं'। विदेशी विद्यालय शायद हमसे पढ़ाई में ऊँचा हो सकता है। लेकिन हमारे संस्कृति और महत्व के आगे कुछ भी नहीं होगा।

केमब्रिड्ज, आक्सफोर्ड, हार्डवार्ड आदि यूणिवेर्सिटियों में पढ़ना कई भारतीयों का ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया का इच्छा है।

विकास में हाथ देंगे। विदेशी विद्यालयों भारत में आने से गुण ही होगा। लेकिन भारत को कब्जा करने की कोशिश नहीं करना चाहिए। गाँधीजी ने कहा है कि "कोई भी मेरे देश में आ-जा सकते हैं, लेकिन देश के ऊपर अपना बल नहीं दिखाना"। मनुष्य सभी देशों को मान देना चाहिए, वो विदेश हो या अंग्रेजी। भारत में विदेशी विश्वविद्यालय आने से बच्चों विभिन्न दृष्टिकोण से चीज देख पाएँगे और उन्हें सुधार पाएँगे। तब भी भारतीय मूल्यों और महत्व अपने साथ ले जाना।